## Holistic Education

Teacher Development Program
IIIT Hyderabad



#### About the session

- Whatever is said is a <u>Proposal</u>
- Do not assume it to be true/false. It is not a process of do's & don'ts
- It is a process of dialogue (b/w you and yourself)
- Verify it on Your Own Right

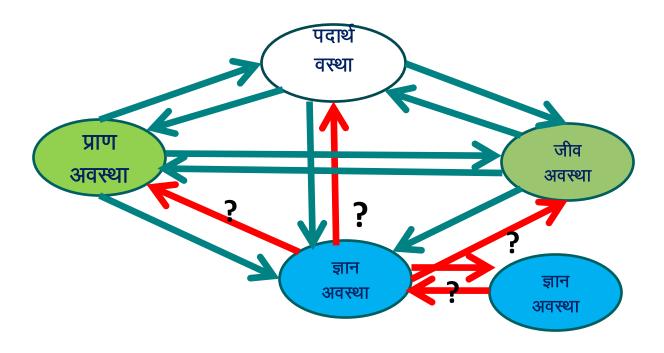
## प्रस्ताव है (मानें नहीं)

जाँचें - स्वयं के अधिकार पर।

अपनी **सहज स्वीकृति** के आधार पर।

यह **संवाद** की प्रक्रिया है। यह संवाद आपके और मेरे बीच शुरू होता है, फिर **आप में** चलने लगता है।





प्रकृति की शेष तीनों अवस्थाएं परस्परपूरक हैं। ये मनुष्य के लिए भी पूरक हैं। सही समझ के अभाव में, मनुष्य इनके साथ पूरकता का निर्वाह नहीं कर पाता है



#### निरंतर सुख के लिए कार्यक्म

#### चारों स्तर पर व्यवस्था को समझना

- 1 स्वयं में व्यवस्था
- 2. परिवार में व्यवस्था
- 3. समाज में व्यवस्था
- 4. प्रकृति / अस्तित्व में व्यवस्था

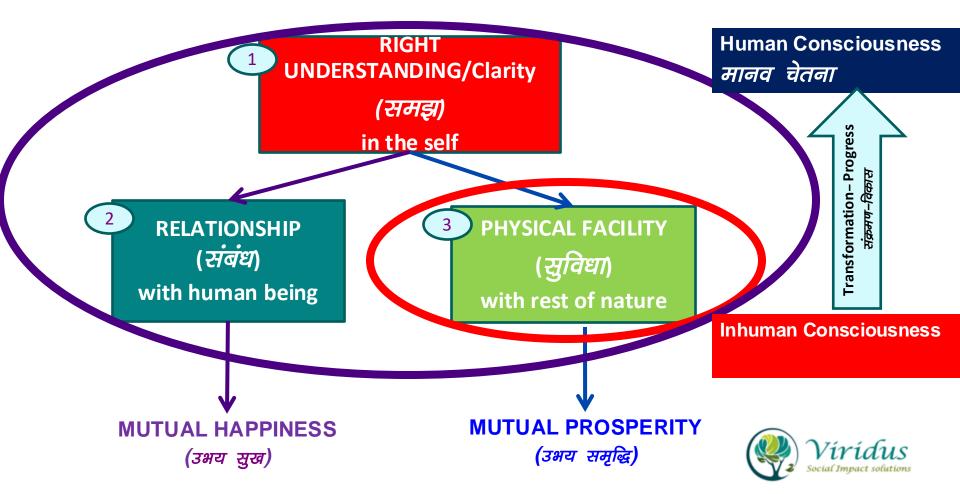
#### चारों स्तर पर व्यवस्था में जीना

- 1. व्यक्ति में
- 2. परिवार में
- 3. समाज में
- 4. प्रकृति / अस्तित्व में

समझने की वस्तु

जीने का फैलाव

### Transformation संक्रमण



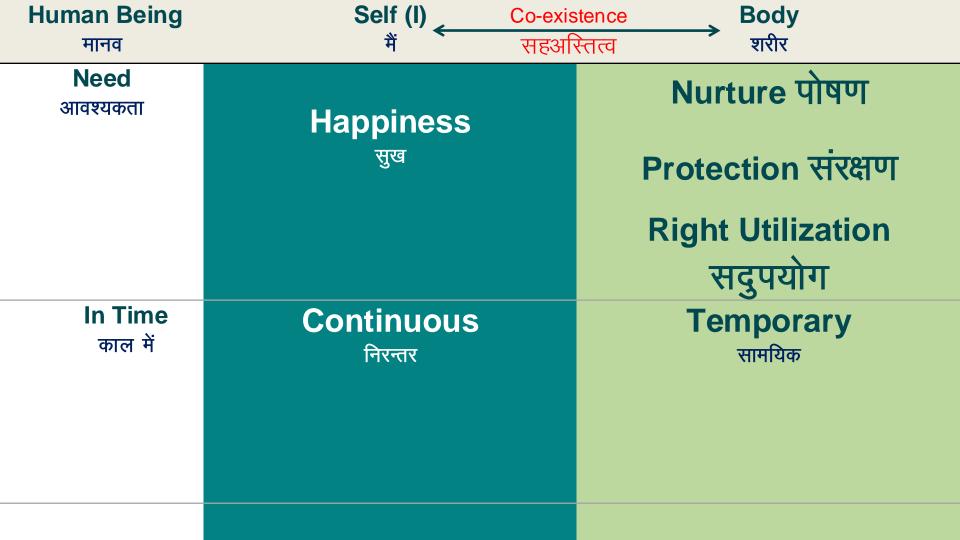
### Human Being मानव



Human Being मानव Need आवश्यकता Happiness सुख Nurture पोषण

Protection संरक्षण

Right Utilization सदुपयोग



Right Utilization सदुपयोग Continuous In Time **Temporary** काल में सामयिक निरन्तर Right Understanding & Right Feeling Fulfilled By **Physio-chemical Things** पूर्ति के लिए सही समझ, सही भाव भौतिक-रासायनिक वस्तु ये जरूरतें दो अलग-अलग प्रकार की हैं या एक ही प्रकार की ? क्या दोनों महत्वपूर्ण हैं?

Co-existence

सहअस्तित्व

**Body** 

शरीर

Nurture पोषण

Protection संरक्षण

Self (I)

**Happiness** 

सुख

**Human Being** 

मानव

क्या हम दोनों को पूरा करना चाहते हैं?

इन दोनों के बीच वरीयता क्रम क्या है।

Need

आवश्यकता

**Happiness** Nurture पोषण Need आवश्यकता सुख Protection संरक्षण Right Utilization सदुपयोग In Time Continuous **Temporary** सामयिक काल में निरन्तर Right Understanding & Right Feeling **Fulfilled By Physio-chemical Things** सही समझ, सही भाव भौतिक-रासायनिक वस्तु पूर्ति के लिए मानव मैं और शरीर के सह-अस्तित्व के रूप में है। में एक चैतन्य इकाई है। इसकी आवश्यकता सुख है जो सही समझ और सही भाव से पूरी होती है। शरीर जड़ इकाई है। इसकी आवश्यकता सुविधा है, जो भौतिक-रासायनिक वस्तुओं से पूरी होती है। में की आवश्यकता भौतिक रासायनिक वस्तुओं से पूरी नहीं हो सकती

Self (I)

भैं

शरीर की आवश्यकता समझ और भाव से पूरी नहीं हो सकती

**Human Being** 

मानव

Co-existence

सहअस्तित्व

**Body** 

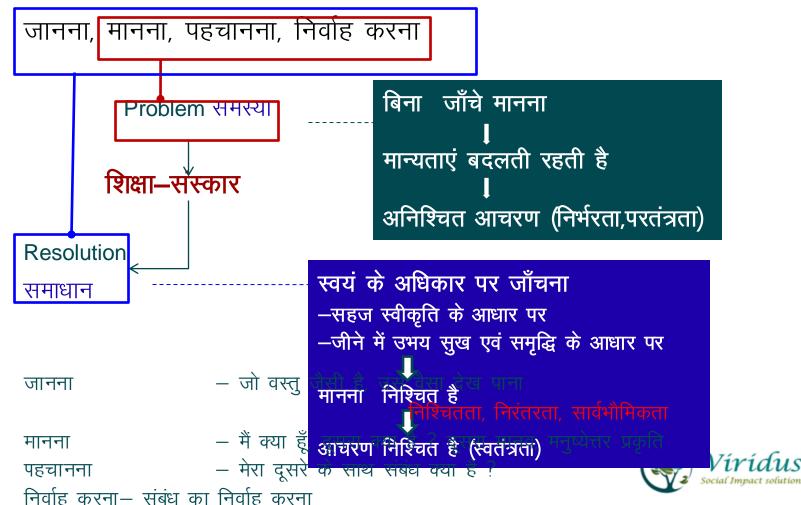
शरीर

#### सारांश

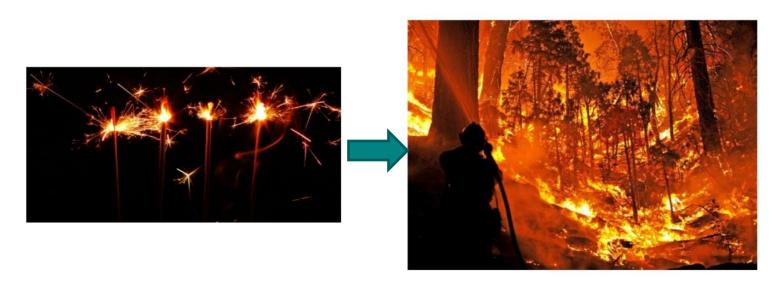
- मानव मैं और शरीर के सह—अस्तित्व के रूप में है।
- में एक चैतन्य इकाई है। इसकी आवश्यकता सुख है जो सही समझ और सही भाव से पूरी होती है।
- शरीर जड़ इकाई है। इसकी आवश्यकता सुविधा है, जो भौतिक—रासायनिक वस्तुओं से पूरी होती है।
- में की आवश्यकता भौतिक रासायनिक वस्तुओं से पूरी नहीं हो सकती शरीर की आवश्यकता समझ और भाव से पूरी नहीं हो सकती



#### जानना, मानना

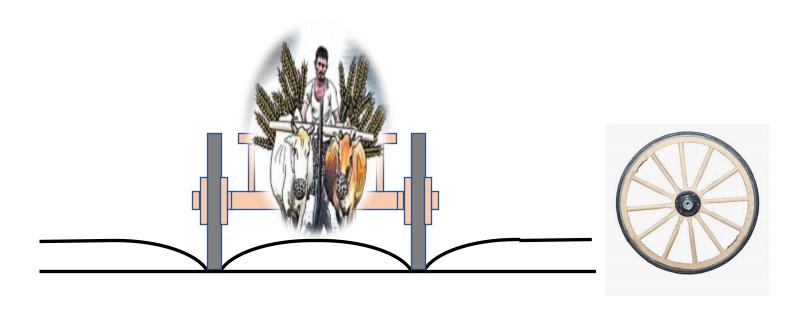


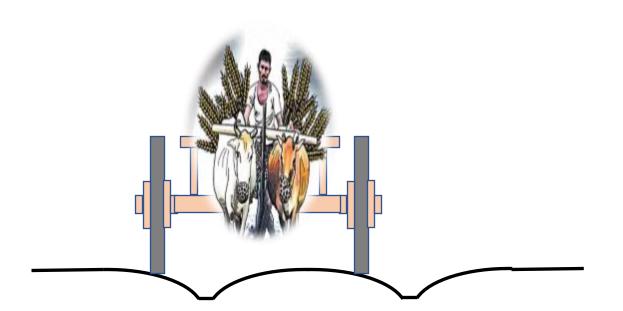
## The Spark to a Forest Fire





## Nature of our resolutions





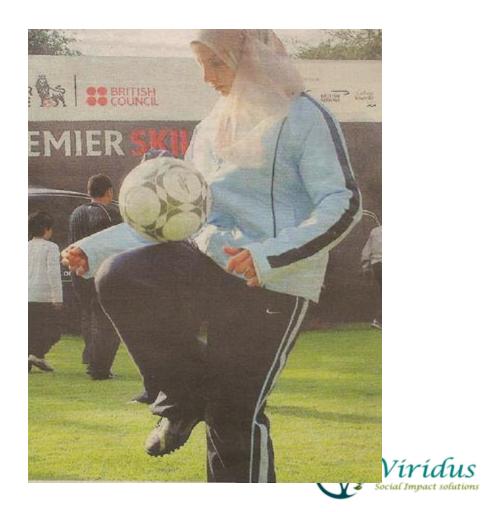
What is the lady in the picture doing?

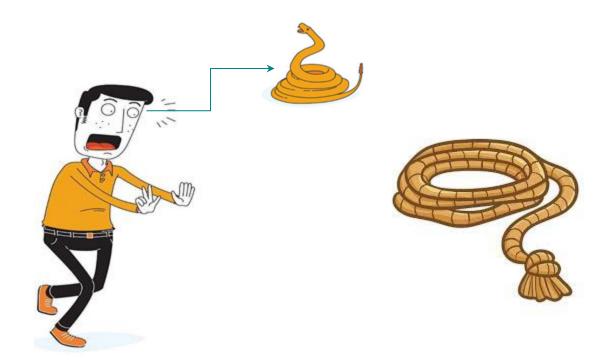
तस्वीर में महिला क्या कर रही है?





The Complete Picture पूरी तस्वीर







What will happen when your projections are wrong? जब आपके अनुमान गलत होंगे तो क्या होगा?

What will happen when you evaluate the situation wrongly?

जब आप घटना का गलत मूल्यांकन करेंगे तो क्या होगा?



# हमारे गलत मूल्यांकन हानिकारक भावनाओं और प्रतिक्रियाशील व्यवहार को जन्म देते हैं

घटना

मूल्यांकन

भाव & व्यवहार



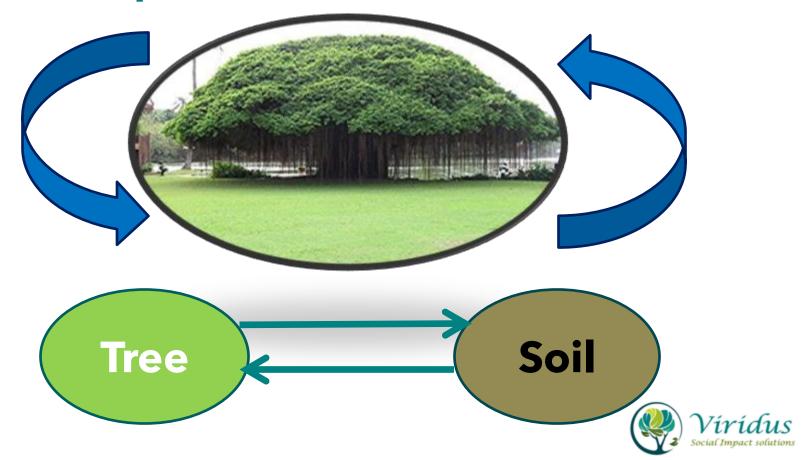




## परिवार में व्यवस्था

संबंध को समझना

## Relationship संबंध - Mutual Enrichment



## Mutual Fulfillment (Fulfilling for both)







## संबंध को समझना

इन भावों को पहचाना जा सकता है— निश्चित हैं 9

इन भावों के निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।



संबंध में भाव है- एक मैं का दूसरे मैं के प्रति

संबंध है- मैं का मैं से

## Right feelings in Relationship

- 1. Trust foundation value 6. Reverence श्रद्धा
- 2 Respect सम्मान7. Glory गौरव
- 3. Affection स्नेह 8. Gratitude कृतज्ञता
- 4. Care ममता 9. Love प्रेम complete value
- 5. Guidance वात्सल्य जब हम इन भावों से जी रहे होते हैं, तो हम सुखी होते है।

जब हम परस्परता में इन भावों का निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।

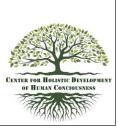


## **Any Questions ?????**

## Right feelings in Relationship

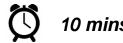
- 1. Trust foundation value
- 2 Respect सम्मान
- 3. Affection स्नेह
- 4. Care ममता
- 5. Guidance वात्सल्य

- 6. Reverence श्रद्धा
  - 7. Glory गौरव
- B. Gratitude कृतज्ञता
- 9. Love प्रेम complete value





- Take a piece of paper. In the middle draw a diagram similar to what you see
- Make sure there is enough room around the diagram
- ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में योगदान दिया
- वे सभी लोग जिन्होंने आपके अस्तित्व, विकास और उत्कृष्टता में योगदान दिया
- जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया
- Push yourself, make it exhaustive, remember to add indirect contributions





#### Take a piece of paper; create the table below

## **Exercise 2**



10 mins

	<u>All</u> the things I have received/receiving from मुझे जो भी चीजें मिली हैं	
Family		
Society		
Nature		

Write down all the things you have received Push yourself, make it exhaustive

Take a piece of paper; create the table below

10 mins

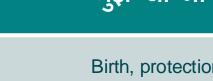
**Family** 

Society

**Nature** 



मुझे जो भी चीजें मिली हैं











10 mins

- - from nature and society
    - Push yourself, make it exhaustive

Take a piece of paper; create the table below

Write down all the things you have received

**All** the things I have received/receiving from

मुझे जो भी चीजें मिली हैं

Birth, protection, guidance . . .

**Family** Society

Education, law & order, roads, internet . . . . **Nature** 

. .

10 mins

- - Write down all the things you have received from nature, society and family

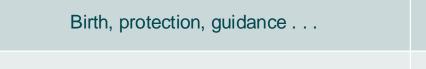
Push yourself, make it exhaustive

Take a piece of paper; create the table below

**Nature** 

## **All** the things I have received/receiving from मुझे जो भी चीजें मिली हैं

**Family** 



. Air, water, light, food . . . .

Society Education, law & order, roads, internet . . . .



**Family** 

- Take a piece of paper; create the table below
- Write down all the things you have received, or contributed to nature, society and family
- Push yourself, make it exhaustive

Birth, protection, guidance . . .

Protection, care, guidance . . .

Society Education, law & order, roads, internet . . . .

**Nature** . Air, water, light, food . . . .



**Family** 

- Take a piece of paper; create the table below
- Write down all the things you have received, or contributed to nature, society and family
- Push yourself, make it exhaustive

All the things I have received/receiving from मुझे जो भी चीजें मिली हैं	All the things I have contributed to सभी चीजें जिनमें मैंने योगदान दिया है
---	--

Society Education, law & order, roads, internet . . . .

Birth, protection, guidance . . .

Humanitarian help, educating others . . .

Protection, care, guidance . . .

. Air, water, light, food . . . . **Nature** 



Society

**Nature** 

- Take a piece of paper; create the table below
- Write down all the things you have received, or contributed to nature, society and family

Humanitarian help, educating others . . .

() 10	mins	Push yours	elf, make it exhaustive

	मुझे जो भी चीजें मिली हैं	सभी चीजें जिनमें मैंने योगदान दिया है
Family	Birth, protection, guidance	Protection, care, guidance

Education, law & order, roads, internet . . . .

. Air. water, light, food . . . .

All the things I have received/receiving from मुझे जो भी चीजें मिली हैं	All the things I have contributed to सभी चीजें जिनमें मैंने योगदान दिया है
---	--

- Think of someone who contributed significantly in your life
- ; think of what that person has done for you
- Write at least five statements; Why are you grateful for that person
- What all the benefits you received from that person

- Bring that person to mind; as if standing in front of you
- Tell this person, all that you are feeling for them right now
- If possible, say it out loud



Sit for a minute in silence to absorb what your body is telling you

Type your insights and feelings in the chat box



#### Gratitude is...

जिन्होंने मेरी जीविका विकास श्रेष्ठता के लिए प्रयास किया उनके प्रति भाव।

Feeling for those who have made effort for my survival, development excellence



#### **Gratitude is...**

-Noticed (सिर)



–Felt and Appreciated (दिल)

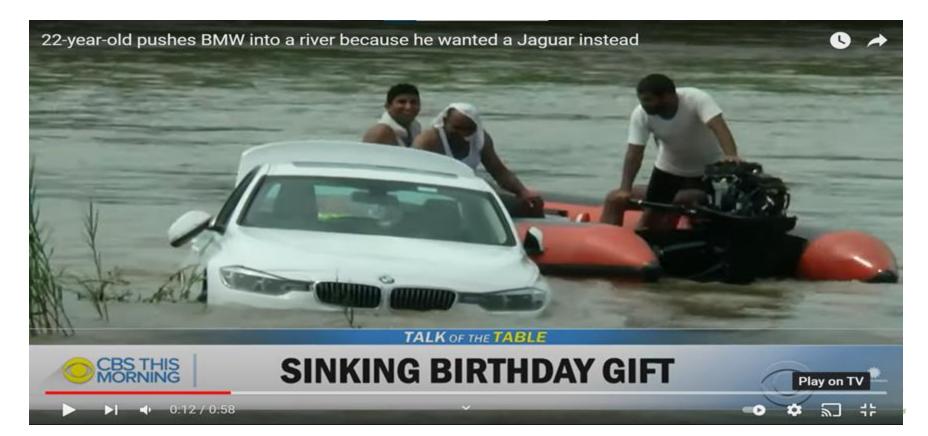


–Acknowledged through expression (हाथ)



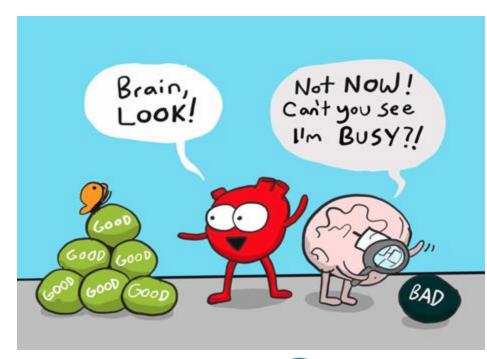


#### So why does this not happen so easily? तो यह इतनी आसानी से क्यों नहीं होता?



#### So why does this not happen so easily ? तो यह इतनी आसानी से क्यों नहीं होता?

- We experience so many gifts from around us, yet we fail to see this
  - —We are so busy
  - —We focus on the negative
  - —We tend to compare
  - —Illusion of independence & selfsufficiency
  - —Our expectations from others





#### Right feelings in Relationship

- 1. Trust foundation value 6. Reverence श्रद्धा
- 2 Respect सम्मान7. Glory गौरव
- 3. Affection स्नेह 8. Gratitude कृतज्ञता
- 4. Care ममता 9. Love प्रेम complete value
- 5. Guidance वात्सल्य जब हम इन भावों से जी रहे होते हैं, तो हम सुखी होते है।

जब हम परस्परता में इन भावों का निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।

#### **Fostering Relationships**

■Think of <u>two/three</u> primary relationships (Home/School) in your life that is important to you and you would like to work on.

Close your eyes and bring that person to mind.

In the course of the next hour any reflection or exercise that you will do, will be in the context of that relationship and that person in mind.



#### Assurance on the intent



#### विश्वास का मूल्यांकन

जाँचे अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर

जाँचे – योग्यता के आधार पर

1a. मैं स्वयं को निरंतर सुखी करना चाहता हूँ

1b. मैं स्वयं को निरंतर सुखी कर पाता हूँ?

2a. मैं दूसरे को निरंतर सुखी करना चाहता हूँ

2b. मैं दूसरे को निरंतर सुखी कर पाता हूँ!

3a. दूसरा स्वयं को निरंतर सुखी करना चाहता है

3b. दूसरा स्वयं को निरंतर सुखी कर पाता है ?

4a. दूसरा मुझे निरंतर सुखी करना चाहता है

4b. दूसरा मुझे निरंतर सुखी कर पाता है ?

जैसा मैं हूँ

<u>चाहना —</u> सहज स्वीकृति जैसा होना मुझे सहज स्वीकार है

#### The Difference In Our Perceptions

दूसरे ने ग्लास तोड़ दिया दूसरे ने जानबूझकर गलती की वह मुझ पर चिल्लाया दूसरे ने जानबूझकर गलती की

मुझसे ग्लास टूट गया

मुझसे हमेशा अनजाने में
लेट होती है।
मेरा इरादा ऐसा नहीं था

**थोड़ा कठोर होकर** बोलाण मुझसे अनजाने में गलती हो गयी है।



#### I confuse competence with intent

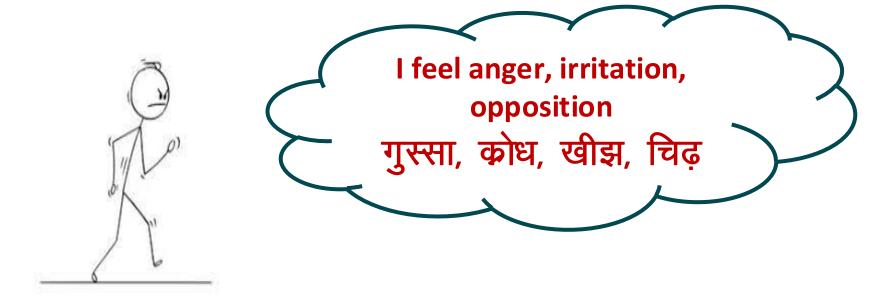


हम दूसरे की योग्यता को देखकर उसके चाहने पर शंका करने लगते हैं। गुस्सा, कोध, खीझ, चिढ़ ये सभी चाहने पर शंका की पहचान है।

दूसरे की चाहना (सहज स्वीकृति) पर शंका होना संबंध में समस्या की एक मूलभूत कारण है।



#### When I doubt intent, I react...





दूसरे की चाहना (सहज स्वीकृति) पर शंका होना संबंध में समस्या की एक मूलभूत कारण है।



#### स्वयं में जाँचे

कितने लोगों की चाहना सहज स्वीकृति पर मुझे हमेशा विश्वास बना रहा है- निरंतर, बिना किसी शर्त के

यदि मुझे दूसरे की चाहना पर विश्वास है, लेकिन उसकी योग्यता कम है, तो ऐसी स्थिति में हमें क्या सहज स्वीकार है।

- उसकी योग्यता विकसित करने में सहयोग करना
- 2. खीझना
- 3. गुस्सा करना
- 4. विरोधी के रूप में देखना

विश्वास

अविश्वार

विश्वास संबंध का आधार मूल्य है।

#### When I Distinguish Competence From Intent ...

- I acknowledge that the problem is due to a lack of competence, not a lack of intent
- I can see that he may have difficulty in understanding and also that I may have difficulty in explaining
- I make an effort to help improve his/her competence with positive feeling
- I take responsibility



# In your chosen relationship, which box would you place yourself in most often

- I am assured(आश्वस्त होना)of the other's intent!
- I focus on 'competence"
- I try to improve their and my ability (योग्यता)
- I am able to respond appropriately

OR

- I doubt Intent!
- I get irritated and angry
   !!(खीझना गुस्सा करना)
- I feel opposition !(विरोधी के रूप में देखना
- I react !!

appropriately

I am able to respond



#### **Anchoring in your relationships -**

#### **Few Guiding Questions:**

- What happened? What was the situation? Who was the person involved?
- How did you react?
- What was the impact on the person?
- What was the impact on the relationship?
- What was my assumption about his/her intention?
- Which expectation of mine did it not meet?
- What do I know about their competence in this area?
- What does my reaction tell me about my competence?
- How could I have responded with greater acceptance and empathy?

"Assurance on the Intent"
of others results in
emotional security and
feeling of trust.
It enables us to relate to
other, helps to work on
mutual competence



#### Are our expectations aligned to others....

Ability to receive & understand (पात्रता) Ability to do (योग्यता)

"The other is not listening. I told 100 times! He/she doesn't want to understand"

or

"I need to explain in a way that the other is able to pay attention and understand"



Assurance on intent is the starting point for mutual development and fulfilment in relationships



#### सारांश

दूसरा मेरे सुख, समृद्धि के अर्थ में है, इस बात की आश्वस्ति, विश्वास है। यदि मुझे दूसरे की चाहना पर विश्वास है तो मैं उसे संबंधी के रूप में देखता हूँ। मैं दूसरे के साथ अपनी पूरकता को देख पाता हूँ। कार्यक्रम हम एक—दूसरे की योग्यता का आकलन करके तय करते हैं।

यदि दूसरे की योग्यता कम है तो

- 1. मैं स्वयं जिम्मेदारीपूर्वक जीता हूँ
- 2. मैं दूसरे को समझदार, जिम्मेदार होने में सहयोग करता हूँ। यदि मेरी योग्यता कम है तो मैं दूसरे से समझने, सीखने को तत्पर होता हूँ।

#### अविश्वास की स्थिति में

- में स्वयं की चाहना और दूसरे की योग्यता के आधार पर आकलन करता हूँ।
- बार-बार हमें दूसरे के प्रति गुस्सा, कोध, खीझ, चिढ़ आता है।





## **Any Questions ?????**

#### Right feelings in Relationship

- 1. Trust Foundation Value
- 2 Respect सम्मान
- 3. Affection स्नेह
- 4. Care ममता
- 5. Guidance वात्सल्य

होता है।

- जब हम इन भावों से जी रहे होते हैं, तो हम सुखी होते है।

- जब हम परस्परता में इन भावों का निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख

- 9. Love प्रेम complete value

- 8. Gratitude कृतज्ञता

- 7. Glory गौरव

- 6. Reverence श्रद्धा

### **If and Then Trap**









# Are we seeing other person as he/she is?



#### **Acceptance/Empathy**

- Am I accepting other person as he/she is with his shortcomings and background?
- Am I recognising that the other person's competence is a result of their
  - Exposure?
  - Guidance?
  - Repeated practices?



## Affection (स्नेह)

The feeling of being related to the other (acceptance of the other as one's relative)

दूसरे को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव।

विश्वास एवं सम्मान के भाव के साथ हम दूसरे मनुष्य को संबंधी की तरह स्वीकारते हैं।

परस्परपूरकता के लिए जिम्मेदारी एवं निष्ठा

रनेह का अभाव – विरोध / द्वेष / ईर्ष्या

Absence of Affection = Opposition, Jealousy









## **Any Questions ?????**

#### Right feelings in Relationship

- 1. Trust foundation value 6. Reverence श्रद्धा
- 2 Respect सम्मान7. Glory गौरव
- 3. Affection स्नेह 8. Gratitude कृतज्ञता
- 4. Care ममता 9. Love प्रेम complete value
- 5. Guidance वात्सल्य जब हम इन भावों से जी रहे होते हैं, तो हम सुखी होते है।

जब हम परस्परता में इन भावों का निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।



# 'Respect' The Right Evaluation

#### Respect (सम्मान)

```
      Respect =
      Right Evaluation

      सम्मान =
      सम् + मान

      सम्यक्
      मापना

      ठीक ठीक आंकलन करना
```



Over evaluation अधिमूल्यन to evaluate for more than what it is अधिक आंकलन करना

Under evaluation अवमूल्यन to evaluate for less than what it is
 कम आंकलन करना

अपमान

Otherwise evaluation – to evaluate for other than what it is

अमूल्यन

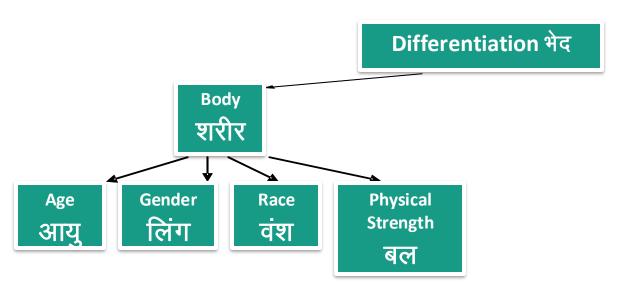
अन्यथा आंकलन करना



**Respect: Right Evaluation** 

# Will the right evaluation be on the basis of the Self (I) or the Body?

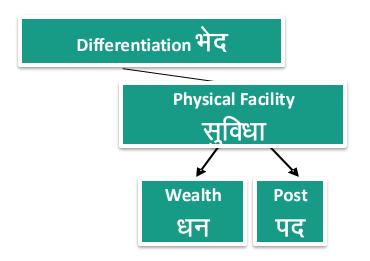




The Gross Misunderstanding is "Human Being = Body"

While the reality is "Human Being is co-existence of Self(I) & Body"



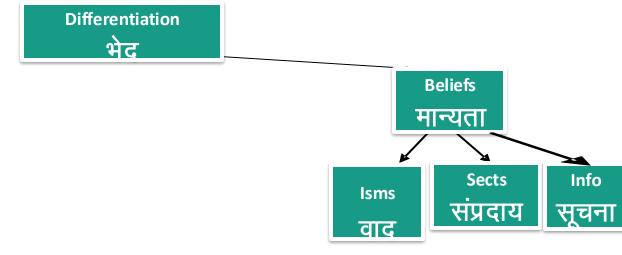


The Gross Misunderstanding is "Physical Facility = Happiness"

While the reality is "Happiness is being in a state of Harmony"



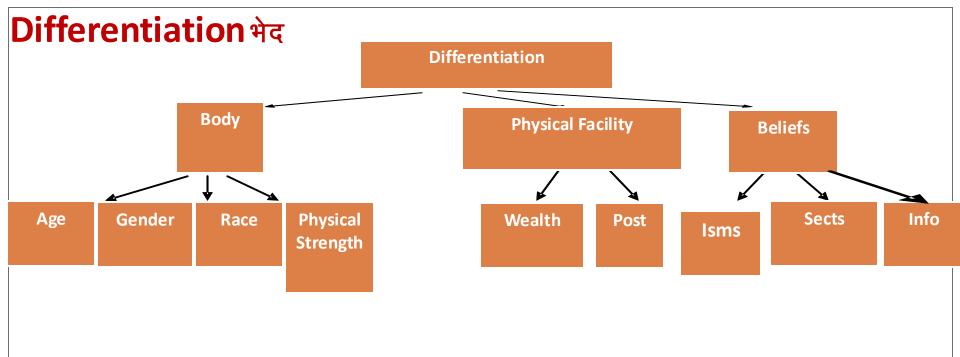
भेद



The Gross Misunderstanding is "If the pre-conditioning of the other matches my preconditioning, then the other is like me"

While the reality is "Every Human Being is like me"





Differentiation = Disrespect

Not Naturally Acceptable... Opposition... Movement...



## Respect: Right Evaluation – on the basis of Self (I)

- 1. Purpose Our purpose (Natural Acceptance) is same
- 2. Program Our program is same
- 3. Potential Our potential is same

#### The Other is Similar to Me

Competence – On basis of right evaluation of our mutual competence, I recognize our complementarities and fulfill it:

If the other has more understanding, is more responsible than me

- I am committed to understand from the other
- If I have more understanding, I am more responsible than the other
- 1. I live with responsibility with the other, unconditionally, unperturbed by the behavior of the other
  - 2. I am committed to facilitate understanding in other (once other is assured in relationship, not before that)

COMPLETE CONTENT of RESPECT

The Other is Similar to Me. We are complementary to each other

## Differentiation

I evaluate on the basis of body, physical facilities or belief (pre conditioning). I compare, compete, differentiate...

am different from the other I make effort to accentuate the

difference, to manipulate, exploit the other

# Respect – on the basis of Self (I)

Our purpose, program, potential is same

The other is similar to me

We are complementary to each other

If other has more understanding than me

• I am committed to understand from other If I have more understanding

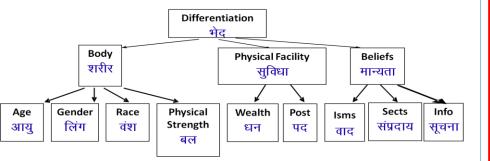
I live with responsibility with the other I am committed to facilitate understanding in the other (once the other is assured in relationship and not before that)

### भेद

### सम्मान – मैं के आधार

शरीर, सुविधा एवं मान्यता के आधार पर तुलनात्मक मैं दूसने से भिन्न (विशेष) हूँ

मैं भेद को बढ़ाने में, दूसरे के शोषण में प्रवृत्त होता हूँ।



- 1. लक्ष्य-हमारा लक्ष्य सहज स्वीकृति एक है
- 2. कार्यक्रम- हमारा कार्यक्रम एक है
- 3. क्षमता— हमारी क्षमता एक है

### दूसरा मेरे जैसा है।

### हम परस्पर पूरक हैं।

### यदि दूसरा मुझसे अधिक समझदार, जिम्मेदार है।

– मैं समझने को तत्पर होता हूँ।

## यदि मैं दूसरे से अधिक समझदार, जिम्मेदार हूँ

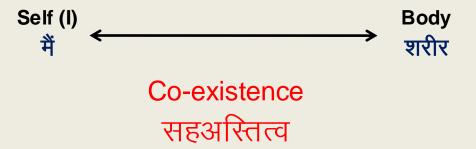
- मैं दूसरे के साथ जिम्मेदारी पूर्वक जीता हूँ
   (निरंतर, बिना प्रतिकिया के)
- मैं दूसरे को सही समझने, जीने में सहयोग
   करता हूँ(संबंध में आश्वस्ति के आधार पर)

# Right feelings in Relationship

- 1. Trust foundation value 6. Reverence श्रद्धा
- 2 Respect सम्मान7. Glory गौरव
- 3. Affection स्नेह 8. Gratitude कृतज्ञता
- 4. Care ममता 9. Love प्रेम complete value
- 5. Guidance वात्सल्य जब हम इन भावों से जी रहे होते हैं, तो हम सुखी होते है।

जब हम परस्परता में इन भावों का निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।

Human Being मानव



## Care (ममता)

भाव।

Feeling of responsibility toward the body of my relative

The responsibility & commitment for **nurturing** and **protection** of the Body of my relative

संबंधी के शरीर के पोषण, संरक्षण की स्वीकृति का

Guidance (वात्सल्य)

Feeling of responsibility toward the self(I) of my relative

The responsibility & commitment for ensuring **Right Understanding** and **Right Feeling** in the self(I) of my relative संबंधी को समझदार व जिम्मेदार बनाने की स्वीकृति का भाव।

Do we ensure both care as well as guidance or are we mostly focused on care?

#### Care (ममता)

### Guidance (वात्सल्य)

Feeling of responsibility toward the body of my relative

संबंधी के शरीर के प्रति जिम्मेदारी का भाव।

Feeling of responsibility toward the self(I) of my relative

संबंधी के मैं के प्रति जिम्मेदारी का भाव।

The responsibility & commitment for **nurturing** and **protecting** the Body of my relative

संबंधी के शरीर के पोषण, संरक्षण की स्वीकृति का भाव।

The responsibility & commitment for ensuring **Right Understanding** and **Right Feeling** in the self(I) of my relative

संबंधी को समझदार व जिम्मेदार बनाने की स्वीकृति का भाव।

ममता एवं वात्सल्य स्नेह के सहज प्रतिफल हैं।

क्या हम आज ममता एवं वात्सल्य दोनों को सुनिश्चित कर रहे हैं?

या हम अधिकांश समय सिर्फ ममता का ध्यान रखते हैं।

क्या हम शरीर का ध्यान रखते समय वात्सल्य का भी ध्यान रखते हैं?

उदाहरण:-बच्चों को खाना खिलाना

# Right feelings in Relationship

- 1. Trust foundation value 6. Reverence श्रद्धा
- 2 Respect सम्मान7. Glory गौरव
- 3. Affection स्नेह 8. Gratitude कृतज्ञता
- 4. Care ममता 9. Love प्रेम complete value
- 5. Guidance वात्सल्य जब हम इन भावों से जी रहे होते हैं, तो हम सुखी होते है।

जब हम परस्परता में इन भावों का निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।

## Reverence (श्रद्धा)

The feeling of acceptance for Excellence श्रेष्ठता की स्वीकृति का भाव।

### Excellence (श्रेष्टता)

Understanding Harmony & Living in Harmony

**Continuous Happiness** 

at all levels of being

- 1. As an individual human being
- 2. As a member of the family
- 3. As a member of society
- 4. As an unit in nature/existence

#### **Excellence and competition are not similar.**

- In excellence, one helps to bring the other to his level
- In competition, he/she hinders the other from reaching to his level



## Reverence

The feeling of acceptance for Excellence

## Worship (पूजा)

Effort made to achieve excellence. श्रेष्ठता के लिए किया गया प्रयास। (inspiration from the revered)



#### Reverence (श्रद्धा)

The feeling of acceptance for Excellence

श्रेष्ठता की स्वीकृति का भाव।

#### Excellence (श्रेष्टता)

व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था पूर्वक जीना

सभी चार स्तर पर

- 1. मानव के रूप में \_ 2. परिवार में

  - 3. समाज में
  - 4. प्रकृति / अस्तित्व में

#### श्रेष्ठता एवं प्रतिस्पर्धा भिन्न हैं।

श्रेष्ठता में हम दूसरे को भी अपने जैसा बनाने का प्रयास करते हैं। प्रतिस्पर्धा में हम दूसरे को अपने जैसा होने से रोकते हैं।

#### Worship (पुजा)

Effort made to achieve excellence. श्रेष्टता के लिए किया गया प्रयास। (श्रद्धेय से प्राप्त प्रेरणा की स्वीकृति)

# Excellence (श्रेष्ठता)

दूसरा मेरे जैसा है – पूरकता दूसरों को अपने जैसा बनने में सहयोग करते हैं। सहज स्वीकृति पर आधारित (व्यवस्था में भागीदारी)

संबंध में विश्वास, सम्मान .... का भाव

समृद्ध

निश्चित एवं निरपेक्ष

# To Be Special (विशेषता)

दूसरा मेरे जैसा नहीं है – मैं खास हूँ।

भेद को बनाए रखना चाहते हैं

मान्यताओं पर आधारित भय-प्रलोभन

स्वयं का अधिमूल्यन एवं दूसरे का अवमूल्यन दिरद्र

सापेक्ष एवं अनिश्चित

Responsibility – ?



# Love (प्रेम)

## Love (प्रेम) – The feeling of being related to all (Complete Value)

- = हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव।
- = पूर्णता में रित पूर्णता में रत होना हर एक के साथ संबंध में निहित रस (भावों) की अनुभूति करना।
- इसकी शुरूआत एक—एक को संबंधी के रूप में स्वीकारने से होती है(Affection स्नेह) एवं धीरे—धीरे हम हर मनुष्य को अपने संबंधी के रूप में देख पाते हैं (Love प्रेम), फिर हम अस्तित्व की हर इकाई के साथ अपने संबंध को देख पाते हैं। एक → अनेक → हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारना
- प्रेम का भाव हर इकाई के लिए होता हैं। परस्परता में जिनके साथ हम निर्वाह कर रहे होते हैं, वहां kindness (दया), beneficience (कृपा) & compassion (करुणा) के रूप में यह अभिव्यक्त होती है।
- प्रेम का भाव (की मानसिकता) अखण्ड समाज का आधार है।



## जाँचे -

संबंध में क्या वरीय है

- भाव
- सुविधा (भौतिक रासायनिक वस्तु)

परस्परता में भाव के निर्वाह में सुविधा की क्या भूमिका है

संबंध में क्या सहज स्वीकार (परस्परपूरक) है :-

- 1. दूसरे से भाव पाने की अपेक्षा करना
- 2. जिम्मेदारीपूर्वक संबंध को समझना, सही भाव को स्वयं में सुनिश्चित करना एवं परस्परता में उनका निर्वाह करना



### परिवार में व्यवस्था – न्याय – परिवार से विश्व परिवार तक (अखण्ड समाज)

- 1. संबंध है- मैं का मैं से स्वीकृति की निरंतरता, बिना किसी शर्त के
- 2. संबंध में भाव है- एक मैं की दूसरे मैं के प्रति
- 3. इन भावों को पहचाना जा सकता है– निश्चित हैं 9 स्वयं में इन भावों की सुनिश्चितता निरंतरता, बिना किसी शर्त के
- 4. इन भावों के निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है संबंध में जिम्मेदारीपूर्वक सभी भावों का निर्वाह (बिना दूसरे से प्रभावित हुए / बिना प्रतिकिया किये)

संबंध में भाव:

- 1. विश्वास Trust आधार मृल्य 2.. सम्मान Respect
  - 7. गौरव Glory

6. श्रद्धा Reverence

8. कृतज्ञता Gratitude

4. ममता Care

3. रनेह Affection

- 9. प्रेम Love पूर्ण मृत्य
- 5. वात्सल्य Guidance

न्याय = मानव-मानव संबंध की पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन, उभय सुख

सहज स्वीकृति न्याय के लिए – परिवार से विश्व परिवार तक

सहज स्वीकृति अखण्ड समाज के लिए

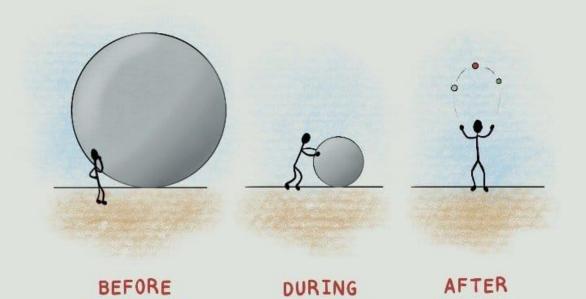


स्थापित मूल्य	शिष्ट मूल्य	मूल्य का अभाव
विश्वास	सौजन्यता	भय
सम्मान	अर्हता	अहंकार, अवसाद
स्नेह	निष्टा	विरोध, द्वेष
ममता	उदारता	शोषण
वात्सल्य	सहजता	गुमराह करना, प्रतिक्रिया
श्रद्धा	पूज्यता	विशेषता, शासन
गौरव	सरलता	दीनता, हीनता, कूरता
कृतज्ञता	सौम्यता	कृतघ्नता
प्रेम	अनन्यता, (दया), (कृपा) – (करुणा)	मोह, वासना — काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, संग्रह, अविद्या, रहस्यता

## **Importance of Paying Attention**







THE TASK

YOU START



A WHILE

# Harmony in the Society (समाज में व्यवस्था)

Human Target (मानव लक्ष्य)



क्या ये सभी आवश्यक हैं ?

इनसे अन्यथा क्या लक्ष्य है ?

क्या हमारा वर्तमान प्रयास इन चारों को पूरा करने के अर्थ में है ?

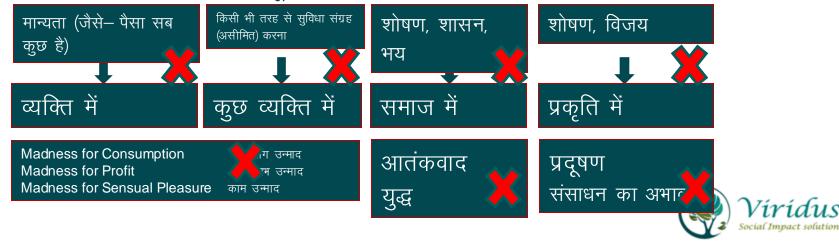


### वर्तमान स्थिति – क्या हम अपने लक्ष्य पहचान पाये ?

#### Human Target (मानव लक्ष्य)



#### Gross Misunderstanding (आधारभूत भ्रम)



## प्रकृति में व्यवस्था – 4 अवस्थाएं, परस्पर पूरकता का संबंध

# Physical

Soil, Metal पदार्थ अवस्था

मिट्टी, धातु

Order

# Pranic Order

Plants, Trees प्राण अवस्था पेड़, पौधे

#### **Animal Order**

Animals, Birds जीव अवस्था **पशु, पक्षी** 

#### Human Order

Human Being ज्ञान अवस्था

मनुष्य



# Relationship of Mutual Fulfillment परस्पर पूरकता का संबंध

Mutual Fulfillment = Relatedness + Fulfillment



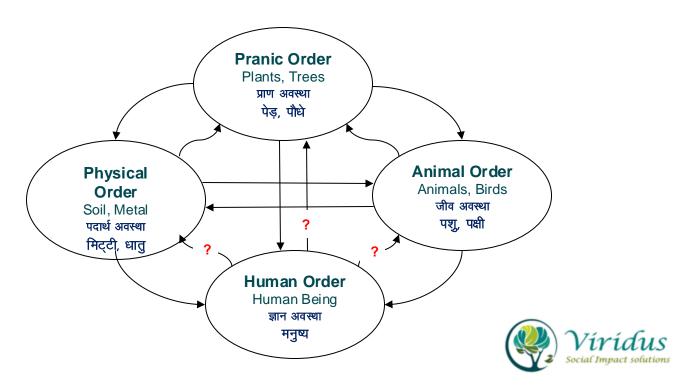




परस्पर पूरकता

= परस्परता

+ पूरकता



ORDERS	UNITS	ACTIVITY
4 अवस्था	इकाई	क्रिया
🛨 अपस्था	হ্মণাহ	19491
Physical	Soil, Metal	Composition-
पदार्थ	मिट्टी, धातु	Decomposition
		रचना–विरचना
Pranic	Plants,	"-" + Respiration
प्राण	Trees	श्वसन—प्रश्वसन
	पेड़, पौधे	
Animal	Animals,	"-", " in Body
जीव	Birds	शरीर में
	पशु, पक्षी	Selecting/Tasting in I
		चयन/आस्वादन मैं में
Human	Human	"-", " in Body
ज्ञान	Beings	शरीर में
	मनुष्य	Imaging, Analysing,
		Selecting/Tasting in I
		चित्रण, विशलेशण,
		चयन/आस्वादन मैं में
		Potential for
		Understanding in I
		समझने की क्षमता मैं में



ORDERS	UNITS	ACTIVITY	INNATENESS
4 अवस्था	इकाई	क्रिया	धारणा
			(Self-organisation)
Physical	Soil, Metal	Composition-	Existence
पदार्थ	मिट्टी, धातु	Decomposition	अस्तित्व
	`	रचना–विरचना	
Pranic	Plants,	"-" + Respiration	" + Growth
प्राण	Trees	श्वसन—प्रश्वसन	पुष्टि
	पेड़, पौधे		
Animal	Animals,	"-", " in Body	", " in Body
जीव	Birds	शरीर में	शरीर में
	पशु, पक्षी	Selecting/Tasting in I	Will to live in I
		चयन/आस्वादन मैं में	में में जीने की आशा
Human	Human	"-", " in Body	", " in Body
ज्ञान	Beings	शरीर में	शरीर में
	मनुष्य	Imaging, Analysing,	Will to live with
		Selecting/Tasting in I	continuous happiness
		चित्रण, विशलेशण,	in I
		चयन/आस्वादन मैं में	मैं में निरंतर सुखपूर्वक जीने की
		Potential for	आशा
		Understanding in I	
		गाराचे की भारत में में	



धारणा:- स्वयं के होने की व्यवस्था

ORDERS	UNITS	ACTIVITY	INNATENESS	INHERITANCE
4 अवस्था	इकाई	क्रिया	धारणा	अनुषंगीयता
			(Self-organisation)	
Physical	Soil, Metal	Composition-	Existence	Constitution based
पदार्थ	मिट्टी, धातु	Decomposition	अस्तित्व	परिणाम अनुषंगी
	,	रचना–विरचना		•
Pranic	Plants,	"-" + Respiration	" + Growth	Seed based
प्राण	Trees	श्वसन—प्रश्वसन	पुष्टि	बीज अनुषंगी
	पेड़, पौधे			
Animal	Animals,	"-", " in Body	", " in Body	Breed based
जीव	Birds	शरीर में	शरीर में	वंश अनुषंगी
	पशु, पक्षी	Selecting/Tasting in I	Will to live in I	
		चयन/आस्वादन मैं में	मैं में जीने की आशा	
Human	Human	"-", " in Body	", " in Body	Education-Sanskar
ज्ञान	Beings	शरीर में	शरीर में	based
	मनुष्य	Imaging, Analysing,	Will to live with	शिक्षा—संस्कार अनुषंगी
		Selecting/Tasting in I	continuous happiness	_
		चित्रण, विशलेशण,	in I	
		चयन/आस्वादन मैं में	में में निरंतर सुखपूर्वक जीने की	
		Potential for	आशा	
		Understanding in I	Right Feeling & Thought	
		समझने की क्षमता मैं में	समाधान	
	<u> </u>		Knowledge ज्ञान	

Viridus Social Impact solutions

अनुषंगीयता: परंपरा के रूप में आचरण की निश्चितता एवं निरंतरता का आधार

<b>ORDERS</b>	UNITS	ACTIVITY	INNATENESS	NATURAL	INHERITANCE
4 अवस्था	इकाई	क्रिया	धारणा	CHARACTERISTIC	अनुषंगीयता
				स्वभाव	
			(Self-organisation)	(Participation)	
Physical		Composition-	Existence	Composition-	Constitution
पदार्थ	Metal	Decomposition	अस्तित्व	Decomposition	based
	मिट्टी, धातु	रचना–विरचना		संगठन–विघटन	परिणाम अनुषंगी
Pranic	Plants,	"-" + Respiration	" + Growth	" + Nurture-Worsen	Seed based
प्राण	Trees	श्वसन—प्रश्वसन	पुष्टि	सारक–मारक	बीज अनुषंगी
	पेड़, पौधे				
Animal	Animals,	"-", " in Body	", " in Body	", " in body	Breed based
जीव	Birds	शरीर में	शरीर में	शरीर में	वंश अनुषंगी
	पशु, पक्षी	Selecting/Tasting in	Will to live in I	Cruelty, Non-cruelty in	-
		l .	में में जीने की आशा	I	
-		चयन/आस्वादन में में		में में क्रूरता, अक्रूरता	
Human	Human	"-", " in Body	", " in Body	", " in body	Education-
ज्ञान	Beings	शरीर में	शरीर में	शरीर में	Sanskar based
	मनुष्य	Imaging, Analysing,		Perseverance, Bravity,	शिक्षा—संस्कार अनुषंगी
		Selecting/Tasting in	l .	Generosity in I	
			happiness in I	में में धीरता, वीरता, उदारता	
		चित्रण, विशलेशण,	में में निरंतर सुखपूर्वक जीने		
		चयन/आस्वादन मैं में	की आशा		
		Potential for	Right Feeling & Thought		
		Understanding in I	समाधान		275
	<u> </u>	। जाम्बर का भाका छ छ	<u> </u>	I	

mpact solutions

स्वभाव :- व्यवस्था में भागीदारी

ORDERS	UNITS	ACTIVITY	INNATENESS	NATURAL	INHERITANCE
	इकाई	क्रिया	धारणा	CHARACTERISTIC	अनुषंगीयता
	X 111X	174- 11		स्वभाव	9.3.1.1
			(Self-organisation)	(Participation)	•
Physical	Soil ग्रिथ	Composition की भू	Existence	Composition-	Constitution
पदार्थ पदार्थ	Metal	Decomposition	। <del>- १</del> ५५५ । अस्तित्व	Decomposition	based
131-1	मिट्टी, धातु	रचना–विरचना	on www.	संगठन-विघटन	परिणाम अनुषंगी
Danaila	, ,		II - One-will-		
Pranic	Plants,	"-" + Respiration	" + Growth	" + Nurture-Worsen	Seed based
प्राण	Trees	श्वसन-प्रश्वसन	पुष्टि	सारक—मारक	बीज अनुषंगी
	पेड़, पौधे				
Animal	Animals,	"-", " in Body	", " in Body	", " in body	Breed based
जीव	Birds	शरीर में	शरीर में	शरीर में	वंश अनुषंगी
	पशु, पक्षी	Selecting/Tasting in	Will to live in I	Cruelty, Non-cruelty in	
		I	में में जीने की आशा	I	मरली पीढी Next Generation
		चयन/आस्वादन मैं में		मैं में क्रूरता, अक्रूरता	A Company of the Comp
Human	Human	"-", " in Body	", " in Body	", " in body निरंतर	शिक्षा—संस्कार
ज्ञान	Beings	शरीर में	शरीर में	शरीर में Contin	nuous <mark>kar basec Human</mark>
	मनुष्य	Imaging, Analysing,			iness iस्कार अनुषं Educatio
		Selecting/Tasting in		Generosity in I	मानवीय n-
		1	happiness in I	मैं में धीरता, वीरता, उद्	परंपरा
		चित्रण, विशलेशण,	मैं में निरंतर सुखपूर्वक जीने		Human
		चयन/आस्वादन मैं में	की आशा		
		Potential for	Right Feeling & Thought	समा	Traditio ज्ञान
		Understanding in I	समाधान		abt
		समझने की क्षमता मैं में	Knowledge ज्ञान	↑ Rio	ng & Right
	I		Tranowicage and	Rig	ng & Understa
		<del>-</del>		Tho	ught nding
	र-वभा	व :— अपन स बड़ा व्यव	ारथा / समग्र व्यवस्था में	मागादारा	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

mpact solutions

### सारांश

- 1. पदार्थ अवस्था मिट्टी, पानी
- 2. प्राण अवस्था पेड़, पौधे
- 3. जीव अवस्था पशु—पक्षी
- 4. ज्ञान अवस्था मानव

प्रकृति = इकाई समूह = 4 अवस्थाएं

सारांश

प्रकृति की सभी 4 अवस्थाएं परस्परपूरक हैं। पहली 3 अवस्थाएं परस्परपूरक हैं एवं मनुष्य के लिए भी पूरक हैं। मानव भी सहज रूप में इन सबों के लिए पूरक होना चाहता है। इसके लिए व्यवस्था को समझने की जरूरत है। व्यवस्था को समझकर ही मनुष्य परस्परपूरकता का निर्वाह कर पाता है।

### मनुष्य की भागीदारी इस परस्परपूरकता को समझने की है। इसके लिए कार्यक्रम:--

- 1. प्रकृति में अंतर्निहित व्यवस्था को समझना
- 2. इन सभी अवस्थाओं के साथ परस्परपूरकता का निर्वाह करना

Activities of Self (I) मैं की कियायें

Space		OCII (I) 1 4	/    <b>3</b> / 4   *	•			
_Ориоо	Fo	rce / Power	<b>A</b>	ctivity		Acceptance	
		बल / शक्ति		क्रिया	सहज र	वीकृति 	
	1.			Realization			
				अनुभव	सह–अस्ति	त्व	
Self (I) ₩	2.		U	Inderstandin	Harmony	in Nature	
				g	व्यवस्था		
0) <b>%</b>				बोध			
	3. De	sire	<b>I</b> magin	G Contemplatio	Participa		
	इच्ह	ज /	चित्रण	n \	Larger O		
				चिंतन	व्यवस्था में	मगीदारी	
	4. Thought		Analysing				
	विचार		विश्लेषण	· /			
	5. Ex	pectation	Selecti	ng/Tasting			
	आश	ш	चयन / 3	ग्रस्वादन		_	
Body शरीर Behaviour व्यव		व्यवहार	Work कार्य	Participation भागीदारी		<u>भागीदारी</u>	
Other	दसरा	Human मा	नव	Rest of Natu	re in	larger Orde	r व्यवस्था में
	Ø., .,			मनुष्येत्तर प्रवृ	$\sim$	J. J	



This Photo by Unknown Author is licensed under CC BY-ND

## All the best!

I wish and pray that you all achieve excellence and live fulfilling life!

